आपातकाल में सृजन फुलवारी

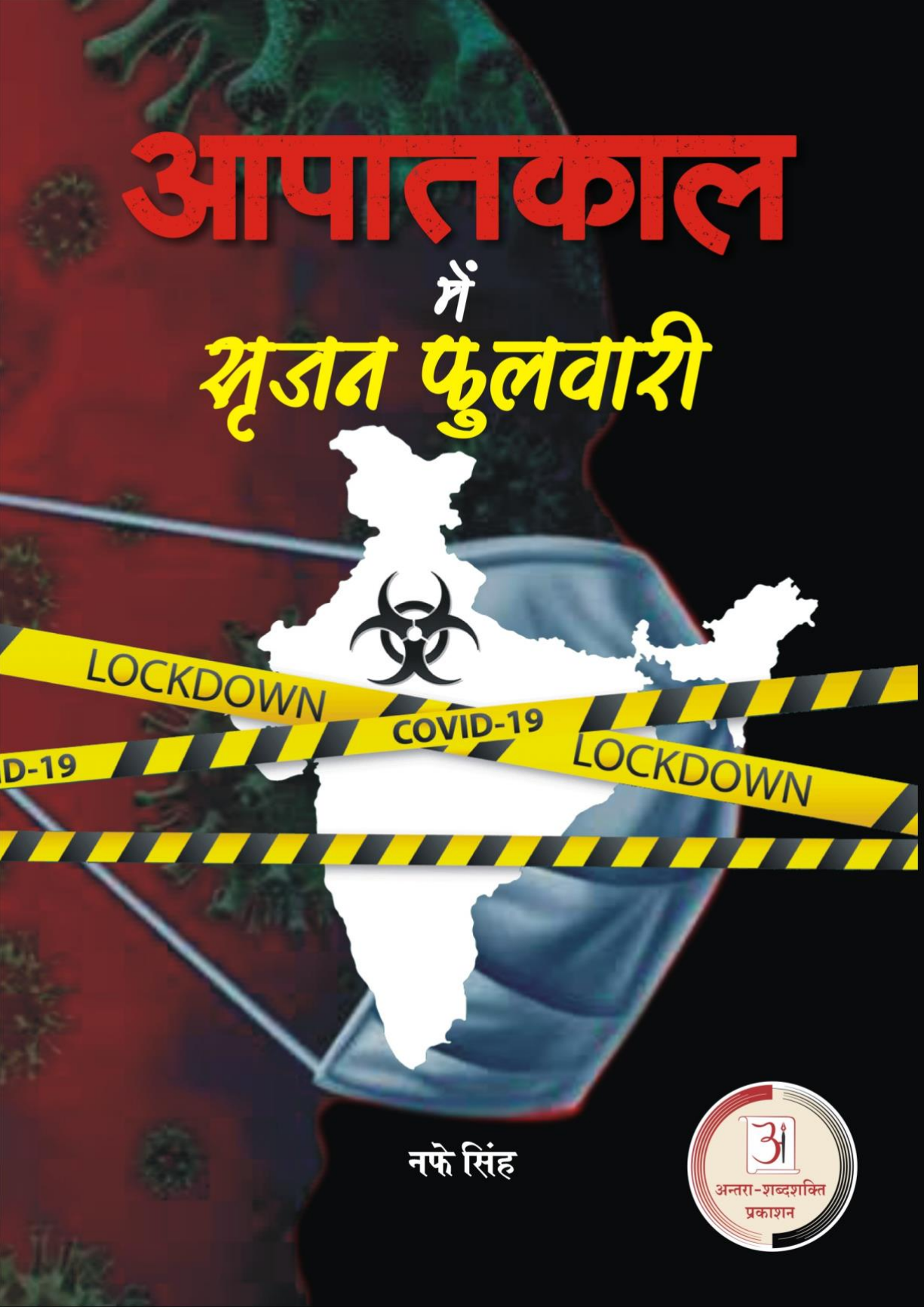

नफे सिंह

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

नफे सिंह

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-152-7
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020 **नफे सिंह**
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY NAFE SINGH

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	उमंग	6
2.	जख्म कसम में बाधक कैसे	7
3.	यह फर्ज अदा करना होगा	8
4.	जिसके शीश गुरु का साया	9
5.	सहादत का सैलाब	10
6.	जो दिखता है वो बिकता है	11
7.	जिस्म जख्मी सही लड़खड़ाते चलो	12
8.	अंकुर होते अरमान	13
9.	चल कदम बढ़ा, मत रुक साथी	14
10.	क्यों आदत हो गई पिटने की	15
11.	दर्दो को रोते देखना है	16
12.	अटल इरादे हों फौलाद	17
13.	उपजे उर से उम्मीद उमंग	18
14.	शेर के मुँह से छीन शिकार	19
15.	जीवन इक रैन बसेरा है	20
16.	अटल इरादे हों फौलाद	21

उमंग

उमंग संग रख इच्छा शक्ति, मंजिल से पहले रुकना मत।
नींद, नशा, आराम, आलस्य, तू इनके आगे झुकना मत।।

निश्चय कर निरंतरता का, मेहनत से मन न कर चोरी।
जीवन में कीमत हिम्मत की, संघर्ष सफलता की डोरी।
समय सरिता के संग चलना, तू बीच भँवर में रुकना मत।
नींद, नशा, आराम, आलस्य, तू इनके आगे झुकना मत।।

प्रशिक्षण, प्रयास, परिश्रम, पथ आसान राहगीर नहीं।
कभी गुरु ज्ञान अभ्यास बिना, यह बनी जीत जागीर नहीं।
कंकर, पत्थर, काँटे पथ में, दुख-दर्द देखकर रुकना मत।
नींद, नशा, आराम, आलस्य, तू इनके आगे झुकना मत।।

सहमत पर मत रहमत करना, जब थककर चकनाचूर रहे।
छाँव देख जब दिल ललचाए, तब मंजिल मन से दूर रहे।
भूख सीख की मिटने मत दे, तू सीखे हुए में टुकना मत।
नींद, नशा, आराम, आलस्य, तू इनके आगे झुकना मत।।

पग-पग पर परेशानी प्यारे, मत बाधाओं से डरना तू।
नया खोज खुद अलग रास्ता, मत पीछे-पीछे चलना तू।
मुसीबतों, मुश्किलों से 'नफे' तू, पथ में रखना घुटना मत।
नींद, नशा, आराम, आलस्य, तू इनके आगे झुकना मत।।

जख्म कसम में बाधक कैसे

जख्म कसम में बाधक कैसे? देख नहीं मैं डर जाऊंगा,
काम अधूरे बाकी काफी, ऐसे कैसे मर जाऊंगा?

फर्ज करें फरियाद आज ये, सिर पर है सरहद का कर्जा।
जब तक इसे निभा न दूँगा कैसे मिले शहीद का दर्जा?
बेशक हाथ पैर कट जाएँ, फिर भी सागर तक जाऊंगा।
काम अधूरे बाकी काफी, ऐसे कैसे मर जाऊंगा?

नज़र टिकी दुश्मन चौकी पे, जहाँ तिरंगा झंडा होगा।
एक हाथ से गोली दागूँ, दूजे परचम डण्डा होगा।।
जुनून जवानों के हृदय में, ठोक-ठोककर भर जाऊंगा।
काम अधूरे बाकी काफी, ऐसे कैसे मर जाऊंगा?

गिर पैरों में दर्द पुकारे, मैं पिघलूँगा न अर्जी से।
तूफान तरु पर दया करे न, वह रुकता अपनी मर्जी से।।
धड़कन धड़के, नाड़ी फड़के, कैसे कहो पसर जाऊंगा?
काम अधूरे बाकी काफी, ऐसे कैसे मर जाऊंगा।।

हिंदुस्तान के दिल के ऊपर, मुझे अभी छाना है बाकी।
पहले पेज छपी फोटो पर, सबको हर्षाना है बाकी।।
देश दुनिया में मां -बाप का, नाम अमर मैं कर जाऊंगा।
काम अधूरे बाकी काफी, ऐसे कैसे मर जाऊंगा?

यह फर्ज अदा करना होगा

आँखें बहती हैं बहने दो, साँसें कहती हैं कहने दो।
एक साथ सौ-सौ दुखड़ो को, गर तन सहता है सहने दो।।
पत्थरों से टकरा-टकराकर झरने की ज्यों झरना होगा।
ये फर्ज अदा करना होगा, ये फर्ज अदा करना होगा।।

दुविधाओं से दिल मत तोड़ो, अपने को अपने से जोड़ो।
मसले को मसलो मुस्काकर, मुश्किलों से मूँह मत मोड़ो।।
जान हथेली पर रख तुमको, अंतिम पल तक लड़ना होगा।
ये फर्ज अदा करना होगा, ये फर्ज अदा करना होगा।।

सुविधा तज दुविधा को मारो, कष्ट सहो दिल से मत हारो।
संकट विकट निकट जब देखो, भारत माँ का नाम पुकारो।
बेशक घाव पकड़ कर बैठें, पर मंजिल तक चलना होगा।
ये फर्ज अदा करना होगा, ये फर्ज अदा करना होगा।।

वर ऐसा लो परम पिता से, जैसे हनुमत ले सीता से।
त्यागऔर बलिदान देखकर, शहीद खड़े होजायें चिता से।।
बस शहीदों के सपनों खातिर, ये जन्म फिदा करना होगा।
ये फर्ज अदा करना होगा, ये फर्ज अदा करना होगा।।

जिसके शीश गुरु का साया

कैसे उमड़ा जोश बदन में, कैसे इतना साहस पाया?
पता कभी नहीं चले किसी को, जिसके शीश गुरु का साया

मुश्किल में मुस्काया कैसे, और संग कैसे था संयम?
आत्मविश्वास आया कैसे, और कैसे निभा सका नियम?
पल में पलटवार कर कहता, यह सब है कुदरत की माया।
पता कभी नहीं चले किसी को, जिसके शीश गुरु का साया

किसके कदमों का पीछा कर, बन गये विशाल कीर्तिमान।
ताली से तालीम तलाशी, उम्मीद से उम्दा सम्मान।
दर्पण और समर्पण बिन ही, कैसे खुद को मैं पढ़ पाया?
पता कभी नहीं चले किसी को, जिसके शीश गुरु का साया

बीच विषमता पंनपी क्षमता, यह कौशल कुशल हुआ कैसे?
मैं उठ नहीं पाया फिर भी उठा, मिली हद से अधिक दुआ कैसे?
कैसे सम्भला गिरते-गिरते, जब-जब पथ में ठोकर खाया?
पता कभी नहीं चले किसी को, जिसके शीश गुरु का साया

कम मुश्किल आसान हो गयी, जुबां नहीं कर सकती जाहिर।
चकित था, चमत्कार देख मैं, जब से दुनिया कहती माहिर।।
गुरु ज्ञान से गरिमा आई, "भारत" जी के गिरता पायाँ।
पता कभी नहीं चले किसी को, जिसके शीश गुरु का साया

शहादत का सैलाब

उठाकर आँख ज़रा देखे जो दुश्मन में अगर दम है।
आखिरी साँस हो सीने में व जब तक हाथ में गन है।
देख ये गलती से भी साहस तू मत कर लेना जालिम।
कि गहरे घावों से घायल, गोलियों से भुना तन है।।

फतेह की प्यास बुझा दे जो, न ऐसा नीर दुनिया में।
कफन की कीमत से सस्ता न कोई चीर दुनिया में।
कहीं कुर्बान कोई होता वतन के नाम पर अक्सर।
बेच देते हैं यहाँ कोई अपना ज़मीर दुनिया में।।

वतन का रंग रगों में हो तो फिका रंग है होली का।
वतन को दान में जीवन, हर एक अंग है गोली का।
मजहब से मेरा रिश्ता कितना गहरा है तुम सुन लो।
जो जीवन से है साँसों का, दामन से है होली का।।

हिल सकते नहीं संकल्प, बर्फ के तेज तूफानों से।
जोश खामोश नहीं होगा, सिंधु के तेज तूफानों से।
हिफाजत हिम्मत से हिंद की हिमालय पर खड़े करते।
बयां हरगिज़ हकीकत को नहीं कर सकते जुबानों से।

जो दिखता है वो बिकता है

सुंदर पुष्प पिरो माला में, कहो किसे धागा दिखता है।
दुनिया की है रीत पुरानी, जो दिखता है वो बिकता है।।

कंधे ऊपर किल बेचारी, लेकर फोटो अडिग खड़ी है।
सब कहते वाह कितनी सुंदर, कभी कील न नजर पड़ी है।।
स्याही हो कुर्बान पेज पर, बोलें सभी पैन लिखता है।
दुनिया की है रीत पुरानी जो दिखता है वो बिकता है।।

नीले अंबर पतंग पिताम्बर, हवा के संग भरे हिलोरी।
सब प्रशंसा करें पतंग कि, नहीं दिखती पतली डोरी।।
करतब करे कमाल आसमां, किसे पता धागा खिचता है।
दुनिया की है रीत पुरानी, जो दिखता है वो बिकता है।।

तेल साथ में जलकर बाती, करती रोशनी तम भगाती।
सब कहते हैं दीपक जलता, जबकि बाती बदन जलाती।।
बाती की ना पीड़ा जानी, ध्यान सदा लौ पर टिकता है।
दुनिया की है रीत पुरानी, जो दिखता है वो बिकता है।।

खजूर देख सब करें अचम्भा, चली न चर्चा कभी जड़ों के।
सभी जीत का दावा करते, दुआ कभी ना दिखे बड़ों की।।
सब तारीफ करें झरने की, बूंद-बूंद पानी रिश्ता है।
दुनिया की है रीत पुरानी, जो दिखता है वो बिकता है।।

जिस्म जख्मी सही लड़खड़ाते चलो

जिस्म जख्मी सही लड़खड़ाते चलो।
जोश के ताप से हिम गलाते चलो।।

जिन्दगी ये दुबारा मिलेगी नहीं।
जान हँसकर वतन पर लुटाते चलो।।

दर्द दिल में छुपे हों हजारों मगर।
मुस्कुराकर सभी को लुभाते चलो।।

फासलों में फँसा है पड़ा फैसला।
फासले को पलक में मिटाते चलो।।

बर्फ में थे दबे साँस फिर भी चली।
राज की बात सबको बताते चलो।।

एक तेरे भरोसे ही सोता वतन।
आखिरी साँस सबको जगाते चलो।।

हर कदम पर यहाँ मौत बैठी हुई।
ठोकरों से "नफे" तुम लुढ़ाते चलो।।

अंकुर होते अरमान

उन जोश जुबानी झोकों से, तन तरु को हिलते देखा है।
अंकुर होकरअरमानों को, घट-तट पर खिलते देखा है।।

आसाँ को सब हंसकर करते, मुश्किल को करे न कोई भी।
कांटों से सब कतराते हैं, फूलों से डरे न कोई भी।।
नित रात चमकते तारों ने, कांटो, पत्थरों हजारों ने।
सरहद पर हद करने वाले, माँओं के पुत्र प्यारों ने।।
उन अमर शहीदों को हंसकर, गले मौत से मिलते देखा है।
अंकुर होकर अरमानों को, घट तट पर खिलते देखा है।।

ममता मां की, प्रेम बहन का, कर याद पिता को झूम रहा।
एक हाथ हाथियार, तिरंगा, दूजे से फोटो चूम रहा।।
मन के मजबूत इरादों ने, सच्चे संकल्पी वादों ने।
घाटी में घायल शेरों के, फरमानों व फरयादों ने।।
कमीज खींचकर दातों से, घावों को गिनते देखा है।
अंकुर होकर अरमानों को, घट तट पर खिलते देखा है।।

जहर कहर का ढहर शहर मन, हर वक्त मौत से खेल रहा।
ईमान शान के लिए जान, सीमा संग संकट झेल रहा।।
भारत माता के नारों ने, उन क्रोध भरी हुंकारों ने।
वहाँ तितर- बितर बिखरी हुई, उन लाशों के बाजारों ने।।
जिद, गुरूर घूरती नजरों को, कदमों में गिरते देखा है।
अंकुर होकर अरमानों को, तट घट पर खिलते देखा है।।

जोश-होश का ऐसा मिश्रण चुन-चुनकर चट्टान तोड़ दे।
देश भक्ति में शक्ति इतनी, बढ़ता हुआ तूफान मोड़ दे।।
नहीं कांटों वाली तारों से, नहीं पत्थरों की दीवारों से।
हरहाल हिफाजत की जगकर हरदम हिम्मत हथियारों से।
हमने अपनों की लाशों से, सरहद को चिनते देखा है।
अंकुर होकर अरमानों को, घट तट पर खिलते देखा है।।

चल कदम बढ़ा, मत रुक साथी

चल कदम बढ़ा, मत रुक साथी, गर रुका तो चलन पाएग।
न रुकता तो ठीक ही रहता, ये सोच-सोच पछताएगा।।

लंबी राही देख न डर तू, धीरे-धीरे कट जाएगी।
ढाई फीट के टुकड़ों में ये, कदम- कदम से बँट जाएगी।।
पहुँचेगा तू जब मंजिल पे, मुड़ देख चकित रह जाएगा।
न रुकता तो ठीक ही रहता, यह सोच-सोच पछताएगा।।

देखना इक दिन चलते-चलते, दुनिया तेरे पीछे होगी।
मुश्किलों के पार वह मंजिल, तेरे कदमों नीचे होगी।।
रुकना मत बस चलते रहना, तू सबको यही बताएगा।
न रुकता तो ठीक ही रहता, यह सोच-सोच पछताएगा।।

अगर बैठा तो आलस्य का नशा बदन पर छा जाएगा।
घुन की तरह लगन लकड़ी को, धीरे-धीरे खा जाएगा।। कितनी भी कर
लेना कोशिश, तू हिम्मत जुटा न पाएगा।
न रुकता तो ठीक ही रहता, यह सोच-सोच पछताएगा।।

होता क्या यह विशाल समुद्र, रुक जाता जो नीर नदी का।
चलती घोड़ी थोड़ी हारे, हाल बुरा हो खड़ी लदी का।।
तेरे पीछे चलने वाला, जब थपकी मार बुलाएगा।
न रुकता तो ठीक ही रहता, यह सोच-सोच पछताएगा।।

क्यों आदत हो गई पिटने की

हर बार मार हार की खा कर, क्यों आदत हो गई पिटने की?
हीरे की हालत हुई आज है, मिट्टी के भाव ही बिकने की।

मेहनत में कहीं मिलावट है, या खुद को खुद पर डाउट है।
कोई जरूर रही है कमजोरी, जो राह में तेरी रुकावट है।

जितनी मेहनत तुम करते हो, वो भी तो उतनी ही करते हैं।
फर्क इतना तुम चाहो विजय, और वो विजय पर मरते हैं।

हिम्मत से हौसला बढ़ता है, वह तभी परिस्थिति पढता है।
इसी सोच से एक पर्वतारोही, माउंट एवरेस्ट पर चढ़ता है।

जब लगन मगन हो लगती है, और रखे दिल जिंदा अरमान।
नामुमकिन को मुमकिन कर दे, वह मुश्किल को कर दे आसान।

हो उठ खड़ा क्यों पड़ा हुआ? तेरी मंजिल तुझे बुलाती है।
एक हार जीत के बाद ढले, अभी वह हार पहना बाकी है।

दर्द को रोते देखना है

उस घायल तन पर घावों को घुट-घुटकर रोते देखा है।
सैनिक के सीने के ऊपर, दर्द को सोते देखा है।।

जख्मी तन से जोश झाँकता, उन आँखों से ज्वाला बरसे।
सबको ही खामोश देखकर, खुद शिव भी तांडव को तरसे।
चिपका-चिपकाकर सीने से, लाशों को ढोते देखा है।
सैनिक के सीने के ऊपर, दर्द को सोते देखना है।।

बहती आँखें ढूँढ रही थी, जो-जो साथी जंग में थे।
हिंद हित हेतु जान गवा दी, जो कुछ पल पहले संग में थे।।
अपने साथी के हाथों को, आँसू से धोते देखा है।
सैनिक के सीने के ऊपर, दर्द को सोते देखा है।।

देख जो रूप सिपाही का, थी काँप गई माँ काली भी।
देव सभी हैरान हो गए, जो बजा न पाए ताली भी।
दूर-दूर तक दुश्मन को भी, नत मस्तक होते देखा है।
सैनिक के सीने के ऊपर, दर्द को सोते देखा है।।

इक तिरंगा पहाड़ी चोटी, बलिदानी के दम लहराए।
एक तिरंगा वोटों खातिर, नेता गली-गली फहराए।
इक की खातिर भीड़ जुड़ी है, एक भीड़ को खोते देखा है।
सैनिक के सीने के ऊपर, दर्द को सोते देखा है।।

अटल इरादे हों फौलाद

चाह मुझे न सुख शोहरत की, कोई अभिलाषा फरियाद।
बस दया दृष्टी इतनी कर दो, की अटल इरादे हों फौलाद।।

खौफ जीत का ऐसे फैले, घर-गली टंग जाएं पर्चे।
बदकिस्मत हारूँ भी तो हों, जीत से ज्यादा मेरे चर्चे।।
मनसुबा हो मेहनत केवल, हो जिस दम पर जिंदा याद।
बस दया दृष्टी इतनी कर दो, की अटल इरादे हों फौलाद।।

नाम जुबां पर जवां रहे तू, इतना कुशल करदे व्यवहार।
दर्द मेरे पर दुआ करें सब, करूँ टूटकर सभी से प्यार।।
संस्कार रहें शिक्षा के संग, झुककर आदर करें औलाद।
बस दया दृष्टी इतनी कर दो, की अटल इरादे हों फौलाद।।

गुरु गरिमा मस्तक चमके, माता-पिता का मन में वास।
सत्य पर साथ स्थाई कर दो, रिश्तो में गहरा विश्वास।।
कभी मेरे तन, मन, वचन से, न बहकर आँसू हों बरबाद।
बस दया दृष्टी इतनी कर दो, की अटल इरादे हों फौलाद।।

हिंसा की हस्ती को मिटा दो, तुम नशा नाम का नाश करो।
पर नारी मांँ -बहन बराबर, हर इक हृदय में प्रकाश करो।।
हर हिंदुस्तानी हिंदी भाषा, बोलें कोई न हों अपवाद।
बस दया दृष्टी इतनी कर दो, की अटल इरादे हों फौलाद।।

उपजे उर से उम्मीद उमंग

जुनून जीत का जिद्दी होकर, जज्बातों संग लड़ता जंग।
विजय विरासत बने बशर्ते, उपजे उर से उम्मीद उमंग।।

हालातों को हरा हराकर, हिम्मत हृदय की बढ़ती है।
बैठा जहन में ये ही बात, चट्टानों चींटी चढ़ती है।।
वजन बदन से ज्यादा होता, पहुँचे मंजिल पाकर तंग।
विजय विरासत बने बशर्ते, उपजे उर से उम्मीद उमंग।।

दुर्गम पथ है, दूर पथिक है, पथ फिर भी पैरों के नीचे।
इम्तिहान ले बोझ बैल का, कर बर्दाश्त दर्द रथ खींचे।।
मंजिल को पाने की चाहत, कर देती है सभी को दंग।
विजय विरासत बने बशर्ते, उपजे उर से उम्मीद उमंग।।

भाग्य भागे कर्म के पीछे, कर्म रहे मेहनत के पास।
मेहनत मोहताज निष्ठा की, निष्ठा काबिलियत की दास।।
काबिलियत में कमी एक ही, बिनअवसर के होती अपंग।
विजय विरासत बने बशर्ते, उपजे उर से उम्मीद उमंग।।

कैसे बिंब दर्शाए दर्पण, जब तक साफ करो नहीं धूल।
ह्-ब-हू फतेह की फितरत, भूल कर न दोहराओ भूल।।
'नफे' भूल है भयंकर बिच्छू, काटता उसे रहे जो संग।
विजय विरासत बने बशर्ते, उपजे उर से उम्मीद उमंग।।

शेर के मुँह से छीन शिकार

योद्धा असली वो ही होता, जीत पर रखता जो अधिकार।
महीनोंभर भूखा रह खाता शेर के मुँह से छीन शिकार।।

चाल अगर कोई ना चलती, होती जब गलती पर गलती।
कैसे उससे निपटा जाए, बुद्धि एक ही बात उगलती।
अंतिम पल नहीं हिम्मत हारे, दृढ़ संकल्पी रखता विचार।
महीनोंभर भूखा रह खाता, शेर के मुँह से छीन शिकार।।

ठान लिया वह करके छोड़े, पेज नया इतिहास का जोड़े।
हालातों को हाथ में लेकर, अपनी तरफ जीत को मोड़े।
जब तक जीत मीत ना बनती, करता नए-नए अविष्कार।
महीनोंभर भूखा रह खाता, शेर के मुँह से छीन शिकार।।

साँस रोककर अंतिम पल में, दाँतो नीचे ऊँगली दाबें।
दर्शक जीत देखकर अपनी, कुर्सी छोड़ मिलन को भागे।
छल कपटों के बल के ऊपर, वो करता नहीं जीत स्वीकार।
महीनोंभर भूखा रह खाता, शेर के मुँह से छीन शिकार।।

दुश्मन की कमजोरी को वो, पलक झपकते लेता भाप।
प्रभावी तरकीब बनाता, करे कभी नहीं पश्चाताप।
जोशीले नारों के बल पर, तैरकर सागर करता पार।
महीनोंभर भूखा रह खाता, शेर के मुँह से छीन शिकार।।

जीवन इक रैन बसेरा है

जीवन इक रैन बसेरा है, जिसमें सुख-दुख का डेरा है।
कहीं खुशी खिल-खिल हँसती कहीं गम का घोर अंधेरा है।।

हर पल बदलता रूप है ये कभी छाँव, कभी धूप है ये।
चालक इंसां के तन-मन का, रखता अपने अनुरूप है ये।
ऋतुओं के जैसा अलग-अलग, आता बदलकर चेहरा है।
कहीं खुशी खिल-खिल हँसती कहीं गम का घोर अंधेरा है।।

कभी खुशियों का सुर्य चमके, हृदय में प्रेम, प्यार पनपे।
अनुराग ख्वाब छेड़े रुक-रुक, हँस-हँसके फूल खिलें मन के।
ना समझ सका कोई इसको, गिरगिट का तात चचेरा है।
कहीं खुशी खिल-खिल हँसती कहीं गम का घोर अंधेरा है।।

कहीं अपनों से बिछड़ा देता, कहीं औरों से पिछड़ा।
कभी सफलता हाथों देकर, बेहद मन को इतरा।
लोहे से जब हालात बनें, बनता उस वक्त ठठेरा है।
कहीं खुशी खिल-खिल हँसती कहीं गम का घोर अंधेरा है।।

कहीं लहर समुद्र सी रखता, स्वभाव फलों की ज्यों चखता।
लालच मन में सुख पाने की, ना कोसों चल मानव थकता।
कहने को क्षणभंगुर है ये, ना तेरा है ना मेरा है।
कहीं खुशी खिल-खिल हँसती कहीं गम का घोर अंधेरा है।।

अटल इरादे हों फौलाद

चाह मुझे न सुख,शोहरत की न कोई अभिलाषा फरियाद।
बस दया दृष्टी इतनी कर दो,की अटल इरादे हों फौलाद।।

खौफ जीत का ऐसे फैले, घर-गली टंग जाएं पर्चे।
बदकिस्मत हारूँ भी तो हों, जीत से ज्यादा मेरे चर्चे।।
मनसुबा हो मेहनत केवल, हो जिस दम पर जिंदा याद।
बस दया दृष्टी इतनी कर दो, की अटल इरादे हों फौलाद।।

नाम जुबाँ पर जवाँ रहे तू, इतना कुशल करदे व्यवहार।
दर्द मेरे पर दुआ करें सब, करूँ टूटकर सभी से प्यार।।
संस्कार रहें शिक्षा के संग ,झुककर आदर करे औलाद।
बस दया दृष्टी इतनी कर दो, कीअटल इरादे हों फौलाद।।

गुरु गरिमा मस्तक चमके, माता-पिता का मन में वास।
सत्य पर साथ स्थाई कर दो, रिश्तो में गहरा विश्वास।।
कभी मेरे तन, मन, वचन से, न बहकर आँसू हों बरबाद।
बस दया दृष्टी इतनी कर दो,कीअटल इरादे हों फौलाद।।

हिंसा की हस्ती को मिटा दो, तुम नशा नाम का नाश करो।
पर नारी मां-बहन बराबर, हर इक हृदय में प्रकाश करो।।
हर हिंदुस्तानी हिंदी भाषा, बोलें कोई न हो अपवाद।
बस दया दृष्टी इतनी कर दो,की अटल इरादे हों फौलाद।।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

नफे सिंह

मालड़ा, जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)

Email- nafesinghyog@gmail.com

Mobile - 9996658953

अंतरा शब्द शक्ति परिवार के संचालक मंडल एवं पूरी टीम को सादर प्रणाम। कविता भावनाओं एवं संवेदनाओं का वो मिश्रण है जो समय सीमा एवं बंधनों से मुक्त स्वतरू आजाद होता है। परंतु आपातकालीन सृजन न केवल सीमित समय सीमा और बंधनों में बधा होता है बल्कि हिंदी साहित्य का विकास , उत्प्रेरणा एवं मार्गदर्शक बन कर सभी पाठकों को देश हित हेतु उत्साहित भी करता है । आपातकाल सृजन के दौरान देश भक्ति ,एकता एवं देशहित को मुख्य रूप से उकेरा जाता है। यह पाठक के उर को ऊर्जा ही नहीं बल्कि देश भक्ति के रंग में रंगने की काबिलियत भी रखता है । मेरी ये १५ रचनाएँ अंतरा शब्द शक्ति परिवार को तहे दिल से समर्पित हैं जो आपातकालीन सृजन के माध्यम से मेरे मन में अंकुरित भावनाओं का समावेश है। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि मैं अंतरा शब्द शक्ति परिवार का सदस्य होने पर अपने आप में गौरवान्वित महसूस करता हूँ और मेरा हर एक प्रयास परिवार के उन्नति में संबंधित है।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-152-7

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/